194
H 19
MICROFILM

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1349/10171

आह्वानांक Call No. ______

अवाप्ति सं० Acc. No. 194

194

❀ ओ३म् ❀

आज़ादी का झंडा

राष्ट्रीय,
कविताओं का
अपूर्व संग्रह

आकाशवाणी

IMPERIAL RECORD DEPARTMENT
RECEIVED.
30 MAR. 1931

प्रकाशक—
हिन्दी साहित्य बुक डिपो
आगरा।

प्रथमबार] सन् १९३० [मूल्य)॥।

व्यापारियों को २।) सैकड़ा।

A. B. Press, Agra.

आकाश वाणी

(१)

यह व्रत है अति कठिन समझ कर इसको लेना;
देह, गेह, प्रिय, प्रिया, पुत्र-ममता तज देना।
अपने बल से नाव पड़ेगी इसमें खेना,
पहले ही लो समझ न पीछे देना ठेना॥
करना होगा सामना, भीषण अत्याचार का।
सहना होगा घाव पर घाव, तीर–तलवार का॥

(२)

सह कर सिर पर मार मौन ही रहना होगा,
आये दिन की कड़ी मुसीबत सहना होगा।
रंगमहल सी जेल आहनी गहना होगा,
किन्तु न मुख से कभी 'हन्त हा!' कहना होगा॥
डरना होगा ईश से, और दुखी हाय से।
भिड़ना होगा ठोंक कर खम, अनीति अन्याय से॥

(३)

तुम होगे सुक़रात ज़हर के प्याले होंगे,
हाथों में हथकड़ी पदों में छाले होंगे।
'ईसा' से तुम और जान के लाले होंगे,
होंगे तुम निश्चेष्ट डस रहे काले होंगे॥
होना मत व्याकुल कहीं, इस भव-जनित विषाद से।
अपने आग्रह पर अटल, रहना बस प्रह्लाद से॥

(४)

होंगे शीतल तुम्हें आग के भी अंगारे,
मर न सकोगे कभी मौत के भी तुम मारे।
क्या ग़म है, गर छूट जायंगे साथी सारे,

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
No 194
Date 3-12-71
GOVT. OF INDIA

बहलावेंगे चित्त चन्द्र चमकीले तारे ॥
दुख में भी सुख शान्ति का नव अनुभव हो जायगा।
प्रेम सलिल से द्वेष का, सारा मल धो जायगा ॥

भजन नं० २

भारत न रह सकेगा हरगिज़ ग़ुलाम खाना।
आज़ाद होगा होगा, आता है वह ज़माना ॥
क़ौमी तिरंगे झंडे पर जाँ निसार अपनी।
हिन्दू मसीह मुसलिम गाते हैं यह तराना ॥
अब भेड़ और बकरी बन कर न हम रहेंगे।
इस पस्तहिम्मती का होगा कहीं ठिकाना ॥
परवाह अब किसे है जेल और दमन की प्यारो।
इक खेल होरहा हैं फाँसी पै झूल जाना ॥
भारत वतन हमारा भारत के हम हैं बच्चे।
माता के वास्ते है मंजूर सर कटाना ॥

वीर गर्जना नं० ३

भारत के शेर जागो बदला है अब ज़माना।
प्यारे वतन को इस दम आज़ाद है कराना ॥१८
मत बुज़दिली को हरगिज़ तुम पास भी फटकने।
आख़िर तो दम अदम को होगा कभी रवाना॥
स्वातन्त्र देवी के तुम जल्दी बनो उपासक।
निज पूर्वजों का तुमको गर नाम है चलाना ॥२॥
दृढ़ सत्य पर रहो तुम धारण करो अहिंसा।
आकर के जोश में तुम हुल्लड़ नहीं मचाना ॥३॥
माता को कोख नाहक करते हो तुम कलंकित।
वालण्टियर बनो तुम सब छोड़दो बहाना ॥४॥
दिल में झिझक न लाओ आगे क़दम बढ़ाओ।
है स्वर्ग के बराबर इस वक्त सूली पाना ॥५॥

भजन नं० ४ श्रीकृष्ण यदि आवें

वही है भारतवर्ष प्यारा मगर पड़ा यह उजाड़ क्यों है।
न फूल कलियाँ नजर हैं आती लगी गुलामी की बाड़ क्यों है॥
न जानो जिसका था और कोई जो रहता था पुरबहार गुलशन।
दिया अंधेरी ने इसके पौधों के सारे पत्तों को झाड़ क्यों है॥
जो जानो दिल से मुझे था प्यारा जिसे था खूने जिगर से सींचा।
शजर आजादी का वह यहाँ से दिया किसी ने उखाड़ क्यों है॥
किधर गये हैं वह हिन्दी माली सुपुर्द जिनके था मेरा गुलशन।
दिया उन्होंने गुलों की कलियों को पाओं से आह लताड़ क्यों है॥
पड़ी है लोहे की हथकड़ी इक, तुम्हारे हाथों में प्यारी माता।
बनाई दीवानों की है सूरत, दिया गरेवाँ को फाड़ क्यों है॥
ख्याल दौड़ाये हैं बहुतेरे नहीं सबब कुछ समझ में आता।
बतादे तीर्थ तूही यहाँ पर, सितम का टूटा पहाड़ क्यों है॥

आज़ादी का झंडा

राष्ट्रपति जवाहरलाल देश भक्त नं० ५

भारत का डंका आलम में बजवाया वीर जवाहर ने।
स्वाधीन बनो स्वाधीन बनो समझाया वीर जवाहर ने॥
वह लाल जो मोतीलाल का है, है लाल दुलारा भारत का।
सोते भारत को उठ करके जगवा दिया वीर जवाहर ने॥१॥
दे दे इस्पीचें जिन्दा दिल, कमजोरी दूर भगादी सब।
रग रग में खूं आजादी का, दौड़ाया वीर जवाहर ने॥२॥
हिन्दू व मुसलमाँ सिक्ख जैन, ईसाई पारसी भाई २ हैं।
सब ऊंच नीच का वहम भेद, मिटवाया वीर जवाहर ने॥३॥
एक रोशन आग दहकती है, आजादी की उसके दिल में।
जिससे युवकों का मुर्दा दिल, चमकाया वीर जवाहर ने॥४॥

बन युवक करोड़ों भारत के, भूले थे भोग विलासों में।
युवकों की शक्ती को एक दम चमकाया वीर जवाहर ने ॥५॥
आदर्श चरित्र से वह अपने, युवकों का है सम्राट बना।
आज़ादी का ऊंचा झंडा, लहराया वीर जवाहर ने ॥६॥
गांधी जब आशीश दे बोले, खुद क्लर्क बनूंगा मैं तेरा।
तब सेहरा राष्टपती का सिर, बंधावाया वीर जवाहर ने ॥७॥
लखकर "प्रकाश" यह भारत का, आश्चर्य में डूबी है दुनियां।
कांग्रेस को करके मुट्ठी में, समझाया वीर जवाहर ने ॥८॥

खादी का झगड़ा नं० ६

खादी का डंका आलम में बजवा दिया अब तो गांधी ने।
और युरुप के इन्द्रासन को हिलवा दिया अब तो गांधी ने॥
तुम देशी वस्त्रों को पहनो, दो छोड़ विदेशी कपड़ों को।
यह पाठ भली विधि से हमको, पढ़वा दिया अब तो गांधी ने॥
मनहूस विदेशी कपड़ों को, जलवादी भारत में होली।
शुभ चलन स्वदेशी खादी का, चलवा दिया अब तो गांधी ने॥
जो पहन साड़ियां परदेशी, चलती थीं भारत की नारी।
खादी से उनका सुन्दर तन, सजवा दिया अब तो गांधी ने॥
सर से पैरों तक है खादी, खादी के सूत समुन्दर से।
है आज जमाने के दिल को दहला दिया अब तो गांधी ने॥
खादी की शक्ती बम से भी, है अधिक काम करने वाली।
खादी का गोला भारत को, दिलवादिया अब तो गांधी ने॥
अब त्याग विदेशी वस्त्रों को, पहनो भाई खादी खादी।
झण्डा खादी का भारत में, गढ़वा दिया अब तो गांधी ने॥

उम्मीद की झलक नं० ७

ऊरुजे कामयाबी पर कभी हिन्दोस्ताँ होगा।
रिहा सैयाद के हाथों से अपना आशियां होगा॥
वतन की आबरू का पास देखें कौन करता है।
सुना है आज मक़तल में हमारा इम्तिहां होगा॥
जुदा मत हो मेरे पहलू से ऐ दर्दे वतन हरगिज़।
न जाने बाद मुर्दन मैं कहां और तू कहां होगा॥
यह आये दिनकी छेड़ अच्छी नहीं ऐ खञ्जरे कातिल।
बता कब फैसला उनके हमारे दर्मियां होगा॥
शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले।
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशां होगा॥
कभी वह दिन भी आयेगा कि जब स्वराज देखेंगे।
जब अपनी ही ज़मी होगी जब अपना आसमां होगा॥

ग़ज़ल नं० ८

रूप सब राम के हैं राम के हैं नाम तमाम।
दोनों आलम में यहां क्या वहां घनश्याम तमाम॥
दीनों दुनियां के छूटे सारे सरंजाम तमाम।
आज कल खूब गुज़राती है बस आराम तमाम॥
राहतो रंज मुक़द्दर से हुआ करते हैं।
हक को नाहक ही किया करते हैं बदनाम तमाम।
बन्द तहरीर करो रहने दो तक़रीर फिजूल।
नासहा मेरा इशारे में हुआ काम तमाम॥
शुद्ध कर दिल पै जो दिलबर की खिची है तस्वीर।
वो ही जल्वा वोही कुद्रत वोही अन्दाज़ तमाम॥

नौजवानों की तमन्ना (९)

मुर्दा भारत को जिला जायेंगे मरते मरते।
नाम जिन्दों में लिखा जायेंगे मरते मरते॥
हमको कमज़ोर समझ बैठे हमारे दुश्मन।
उनका अभिमान मिटा जायेंगे मरते मरते॥
ज़ुल्म करती है बहुत हिन्द पर नौकरशाही।
उसकी बदचाल मिटा जायेंगे मरते मरते॥
दिलों पर दुश्मनों के अपनी जवांमर्दी पर।
हिन्द का सिक्का बिठा जायेंगे मरते मरते॥
जेलखाने की भी खुश होके बढ़ायेंगे रौनक।
एक क्या लाखों बना जायेंगे मरते मरते॥
मातृ-भूमि के लिये जान निछावर करदें।
सबक़ भारत को पढ़ा जायेंगे मरते मरते॥
हैं तो ना चीज़ मगर इतनी जुरअत रखते हैं।
हिन्द की बन्दी छुड़ा जायेंगे मरते मरते॥
भगतसिंह, दत्त, दयानन्द, तिलक, गाँधी का।
सबको फ़रमान सुना जायेंगे मरते मरते॥

ग़ज़ल नं० १०

सर फ़रोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।
देखना है ज़ोर कितना बाज़ुए क़ातिल में है॥
रहरवे राहे मुहब्बत रह न जाना राह में।
लज़्ज़ते सहरानवर्दी दूरिये मंज़िल में है॥
वक्त आने दे बतादेंगे तुझे ए आसमां!
हम अभी से क्या बतायें क्या हमारे दिल में है॥
आज फिर मक़तल में क़ातिल कह रहा है बार बार।
क्या तमन्नाए शहादत भी किसी के दिल में है॥

भजन नं० ११

रण भेरी

प्रिय आज़ादी के मतवाले, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं।
बलि-वेदी पर चढ़ने वाले, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(१)

आज़ादी ध्येय हमारा है सत्याग्रह-शस्त्र सम्हारा है।
अमरत्व कवच दृढ़ धारा है, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(२)

हम नित्य सत्य का मान करें, जीवन अपना बलिदान करें।
भारत पर सब कुरबान करें हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(३)

दुनियां से नाता तोड़ दिया, ममता माया को छोड़ दिया।
मन रण क्षेत्र से जोड़ लिया, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(४)

भारत पर वारे जायेंगे, हम सूखे चने चबायेंगे।
पीछे नहिं पैर हटायेंगे हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(५)

खादी का केसरिया बाना, पहना मरदाना प्रण ठाना।
आज़ाद रहें या मरजाना, हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(६)

तैयार जेल में जाने को, धुनि ज़ंजीरों में गाने को।
भारत स्वाधीन बनाने को हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(७)

घातक ले तोपें खड़े रहें, हम छाती खोले खड़े रहें।
फाँसी के तख़्ते चढ़े रहें हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥

(८)

हँसते-हँसते मर जायेंगे, मर जायँगे फिर आयेंगे।
आकर फिर युद्ध मचायेंगे हम सैनिक हैं हम सैनिक हैं॥